खिलौना एवं गुड़िया बनाना

प्रशिक्षण की अवधि - 6 महीने (प्रायः 825 घंटे)

सैद्धान्तिक

१. खिलौना एवं गुड़िया कला की परिभाषा तथा इस कला से लाभ।

२. खिलौना एवं गुड़िया कला की प्राथमिक शिक्षा तथा बनाते समय आवश्यक बातों पर ध्यान।

३. फर्मा बनाने की विधि तथा इससे लाभ।

४. खिलौना बनाने के आवश्यक उपकरणों का वर्णन एवं उनका प्रयोग।

५. खिलौना बनाने के आवश्यक सामग्रियों (कच्चा माल) का वर्णन तथा प्रयोग एवं उनके नाप व तौल।

६. रेक्सीन के खिलौने, इससे लाभ तथा इसकी विशेषता।

७. रेक्सीन से खिलौना बनाने की विधि तथा उसमें प्रयोग की जाने वाली स्टिच (टांके)।

८. विभिन्न जन्तुओं, पशु-पक्षियों, डॉल तथा गुड़ियों-गुड्डों के शारीरिक बनावट का वर्णन।

९. खिलौना बनाने में ड्रॉईंग की आवश्यकता तथा इससे लाभ, विभिन्न आकृतियों की ड्रॉईंग।

१०. खिलौनों में भरी वाली चीजों का वर्णन, उनमें अन्तर तथा उनकी विशेषता।

११. कपड़े और रेक्सीन के खिलौने तथा कांच, प्लास्टिक, मिट्टी एवं कागज के खिलौनों में अन्तर तथा तुलनात्मक विवेचना। इनमें से बच्चों के लिए उपयोगी खिलौने एवं उसका कारण।

१२. खिलौना बनाने में विभिन्न स्टिचों का प्रयोग, उनका कारण एवं उनकी उपयोगिता।

१३. विभिन्न जन्तुओं, पशु-पक्षियों, डॉल तथा गुड़िया बनाने की विधि।

१४. कागज तथा कपड़े के फूल बनाने की विधि।

१५. खिलौनों को सजाने की विधि।

१६. खिलौने का मूल्य निर्धारण करना।

खिलौना एवं गुड़िया बनाना

क्रियात्मक

१. विभिन्न खिलौनों एवं गुड़ियों की ड्रॉईंग एवं उनको ट्रेस करना।

२. विभिन्न खिलौनों एवं गुड़ियों का मेजर कटिंग करना तथा कार्ड-बोर्ड पर फर्मा काटना।

३. कपड़े तथा रेक्सीन पर खिलौना एवं गुड़िया काटने तथा प्रत्येक भागों को जोड़ने का क्रियात्मक कार्य।

४. खिलौनों में रूई या बुरादा भरने का ज्ञान।

५. खिलौना एवं गुड़ियों में स्टिचों का प्रयोग -स्टेप स्टिच, बैक स्टिच, चेन स्टिच, रनिंग स्टिच, मैजिक चेन, लूप स्टिच, बटन सेल स्टिच, ब्लैंकेट स्टिच, फ्रेंच-नोट स्टिच, फेदर स्टिच, हेरिंग-बीन स्टिच। डार्निंग एपलिक वर्क, लौंग एन्ड शॉर्ट स्टिच, ईत्यादि।

६. सीप, मोती, गोटा, किरन, सलमा-सितारा, शीशा, ईत्यादि से खिलौनों को सजाना। कागज तथा कपड़े के फूल बनाना।

उत्पादन कार्य

१. मुर्गा
२. खरगोश (खड़ा एवं बैठा)
३. कुत्ता (खड़ा एवं बैठा)
४. जोकर
५. जिराफ
६. तोता
७. हाथी
८. घोड़ा
९. बन्दर
१०. भालू
११. बिल्ली
१२. ऊंट (बड़ा एवं छोटा)
१३. टेडी बियर
१४. बत्तक (बड़ा एवं छोटा)
१५. मछली
१६. घड़ियाल
१७. चिड़िया
१८. हिरण
१९. गाय या बैल
२०. बगुला
२१. डॉल (बड़ा एवं छोटा)
२२. गुड़िया (विभिन्न प्रदेशों के पोशाक वाली)
२३. तार वाली गुड़िया (विभिन्न फेज में)

बुनाई (मशीन तथा हाथ से)

प्रशिक्षण की अवधि - 6 महीने (प्रायः 825 घंटे)

सैद्धान्तिक

१. बुनाई कला का परिचय, इससे लाभ, इसकी आवश्यकता तथा उपयोगिता। घरेलू उद्योग के दृष्टिकोण से इसका महत्व।

२. बुनाई के ऊन, ऊन का इतिहास, उनका वर्गीकरण, परिभाषा, उनके गुण तथा प्रयोग। प्लाई संबंधी गणना एवं परिभाषा। सिंगल निट, हेवी निट तथा डबल निट ऊन में अंतर। ऊन को ठीक अवस्था में रखना। ऊन की मजबूती, ऐंठन (टुईस्ट) तथा लचीलापन। आपूर्ति के प्रमुख स्रोत, समानता तथा रंग का पक्का होना।

३. बुनाई मशीन, उनका नामकरण तथा प्रयोग, यंत्र चलाने की विधि, उसके प्रत्येक पुर्जों का नाम, उनके काम का विवरण तथा मशीन में उन्हें लगाने का तरीका, उनका व्यवहार। बुनाई मशीन के विभिन्न गौजों के लिए उचित गणना (प्लाई), उनका चुनाव। बुनाई मशीन से लाभ एवं उनकी सुरक्षा। व्यवसायिक दृष्टिकोण से इसकी उपयोगिता।

४. बुनाई कला के काम में आने वाली आवश्यक सामग्रियों का वर्णन एवं उनका प्रयोग। हाथ सलाईयों के प्रकार, उनका वर्गीकरण, ऊन के प्लाई के अनुरूप सलाईयों का चुनाव तथा प्रयोग।

५. ऊन की चीजें बनाने की विधि, वस्त्रों के अनुरूप उनका चुनाव, ऊन के गोले बनाने एवं गाढ़ देने की विधि, फैशन के अनुरूप परिष्कृत एवं तैयार करना, गोल तथा बिना जोड़ (सिलाई) की बुनाई, बुनाई में प्रयोग होने वाली स्टिचें, उनका विवरण तथा प्रयोग, बुनी हुई चीजों की सिलाई, उनके परिमाण की गणना।

६. बुनाई के वस्त्र, उनका नाम लेने का तरीका, बुनाई वस्त्र के व्यवसायिक नाम तथा विवरण, उनसे बनावट (स्टाईल) तथा उसका प्रमाणिक व्याख्या, बुनाई वस्त्र में लेस का प्रयोग तथा बुने हुए वस्त्र में कढ़ाई करने का तरीका, बुने हुए वस्त्र में दोष आना तथा उसे दूर करने का तरीका।

७. ऊन के रंग तथा प्रकार (डिजाईन), रंगों के सिद्धांत, रंगों का मिलान करना (कलर कॉम्बीनेशन), रंगों की एकरूपता तथा विपरीत रंगों का सिद्धांत, विभिन्न प्रकार के नमूने (पैटर्न), जैसे - सादे पैटर्न, फ्लेविल पैटर्न, जाली पैटर्न, जिग-जैग पैटर्न, ऑस्केट पैटर्न, धारीदार पैटर्न, दो रंगों के पैटर्न, ईत्यादि का वर्गीकरण एवं वस्त्रों के अनुरूप उनका चुनाव तथा प्रयोग। बॉर्डर तथा किनारा बुनने के विभिन्न तरीकों का ज्ञान।

८. बुने हुए वस्त्रों को धोने, सुखाने तथा लोहा करने की विधि, बुनी हुई चीजों को सुरक्षित रखने की विधि। ऊनी वस्त्रों को रफ्फू करना एवं पुराने ऊनी वस्त्रों की मरम्मत।

९. क्रुशिया बुनाई की व्यापकता तथा उससे लाभ, क्रुशिया बुनाई के लेस तथा विभिन्न वस्त्र एवं उनका प्रयोग।

१०. क्रुशिया बुनाई के काम में आने वाले सिल्केन तथा सूती धागे, उनका विवरण तथा प्रयोग। क्रुशिया बुनाई के स्टिच तथा नमूने।

११. ऊन तथा अन्य कच्चे माल का दाम लगाना, बुने हुए वस्त्र का मुल्य निर्धारित करना, तैयार सामान की बिक्री करना।

बुनाई (मशीन तथा हाथ से)

क्रियात्मक

व्यवहारिक प्रशिक्षण

१. ऊन के रेशों (प्लाई) का विभाजन एवं जांच करना, ऊन का गोला बनाना। विभिन्न प्रकार के नमूने (पैटर्न) बनाना।

२. बुनाई मशीन का व्यवहारिक ज्ञान तथा सभी यंत्रों की जानकारी एवं प्रयोग। मशीन पर तरह-तरह के सादे तथा फैन्सी डिजाईन बनाना।

३. बुने हुए वस्त्र पर कढ़ाई करना। विभिन्न प्रकार के कॉलर, बॉर्डर, आस्तीन तथा गला बनाना। बुने हुए वस्त्र को रफ्फू करना।

उत्पादन कार्य

१. बच्चों के वस्त्र

बेबी मोजा, बेबी जूता, बेबी टोपी, बेनिट, बेबी सूट (कोट, निक्कर, मोजा तथा टोपी), लेगिंग तथा लेगिंग सूट, बेबी स्विम सूट, बेबी कोट, मैटिनी कोट, निक्कर या पैंट, कोट, बेबी फ्रॉक, गर्ल्स फ्रॉक, कोट फ्रॉक, बच्चों के आधी तथा पूरी आस्तीन के स्वेटर, बेलबाट्स, इत्यादि।

२. स्त्रियों के वस्त्र

ब्लाउज (आधी आस्तीन तथा पूरी आस्तीन के), शॉल, कैप, कार्डिगन। लड़कियों के पूरे बाँह का स्वेटर, कोट, स्कार्फ, इत्यादि।

३. पुरूषों के वस्त्र

चार सलाई का मोजा, दस्ताना, मफलर, लड़कों के हाफ तथा फुल स्वेटर, लड़कों के जर्सी तथा कार्डिगन, बड़ा (जेन्ट्स) हाफ तथा फुल स्वेटर, बड़ा जर्सी एवं कार्डिगन, हाईनेक पुल-ओवर।

४. क्रोशिया बुनाई

पेटीकोट का लेस, साड़ी का लेस, टेबुल-क्लॉथ तथा ट्रे-क्लॉथ का किनारा, ग्लास तथा अन्य बर्तन के ढक्कन, ट्रे कवर तथा थाल पोश, ४ पिन से विभिन्न चीजें बनाना।